सूरह — एक कहानी

# सूरह अल-जुमुआ

जुमा

पूरा सफ़र — अन-पढ़ उम्मत और हफ़्तावार ईद —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 62 • 11 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

### एक नज़र में सूरह

हुवल्-लज़ी ब'अस फ़िल्-उम्मिय्यीन रसूलम्-मिन्हुम
2. वही है जिसने अन-पढ़ों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा।

यत्लू 'अलैहिम आयातिही व युज़क्कीहिम व यु'अल्लिमुहुमुल्-किताब वल्-हिक्मह
2. जो उन्हें आयतें पढ़ कर सुनाता, उन्हें पाक करता, और उन्हें किताब और हिकमत सिखाता है।

कमसलिल्-हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारा
5. उस गधे जैसी मिसाल जो किताबों का गट्ठा उठाता है।

इज़ा नूदिय लिस्-सलाति मिंय्-यौमिल्-जुमु'अति फ़स्'औ इला ज़िक्रिल्-लाहि व ज़रूल्-बै'अ
9. जब जुमा के दिन नमाज़ की अज़ान हो तो अल्लाह की याद की तरफ़ दौड़ो और ख़रीद-फ़रोख़्त छोड़ दो।

फ़-इज़ा क़ुज़ियतिस्-सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्-अर्ज़ि वब्तग़ू मिन फ़ज़्लिल्-लाह
10. फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलब करो।

क़ुल मा 'इंदल्-लाहि ख़ैरुम्-मिनल्-लह्वि व मिनत्-तिजारह
11. कहिए: जो अल्लाह के पास है वो खेल और तिजारत से बेहतर है।

## सबक़ से पहले चार नाम

बेटा, ये सूरह ऐसे खुलती है जैसे कोई शाही फ़रमान खुलता है — हुक्म से पहले बादशाह के लक़बों के साथ: 'जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह की तस्बीह करता है — **अल-मलिक**, बादशाह; **अल-क़ुद्दूस**, बिल्कुल पाक; **अल-'अज़ीज़**, ग़ालिब; **अल-हकीम**, हिकमत वाले।'

चार नाम, बेटा, और हर एक उस सूरह में दाख़िल होने का दरवाज़ा है जो आगे आती है। **अल-मलिक** — वो बादशाह हैं, तो जब जुमा को उनकी पुकार आए, अपनी दुकान बंद करना नुक़सान नहीं; ये एक रईयत का अपने बादशाह को लब्बैक कहना है।

**अल-क़ुद्दूस** — पाक, जो पाक करते हैं; और आप ठीक अगली आयत में 'युज़क्कीहिम' — वो उन्हें **पाक** करते हैं — देखेंगे। **अल-'अज़ीज़** — ग़ालिब, जिन्होंने एक चरवाहों की क़ौम को बुलंद कर के दुनिया को सिखाया। **अल-हकीम** — हिकमत वाले, जिन्होंने हफ़्ते को यूँ तरतीब दिया कि काम और इबादत दोनों का अपना वक़्त हो।

तो सूरह हमें जुमा के बारे में कुछ सिखाने से पहले, ये सिखाती है कि **पुकार कौन रहा है**। आधी इताअत, बेटा, ये जानने में है कि बोल कौन रहा है।

## अन-पढ़ों का मोजिज़ा

फिर एक ऐसी आयत आती है जो इंसानी तारीख़ की सबसे बड़ी तब्दीली को नापती है: '**हुवल्-लज़ी ब'अस फ़िल्-उम्मिय्यीन रसूलम्-मिन्हुम** — वही है जिसने **अन-पढ़ों** में **उन्हीं में से** एक रसूल भेजा।'

समझिए ये उम्मिय्यीन कौन थे, बेटा। एक ऐसी क़ौम जिसके पास तक़रीबन कोई किताबें नहीं थीं, न स्कूल, न कुतुब-ख़ाने; ज़्यादातर अपना नाम तक न पढ़ सकते थे। वो बेटियों को ज़िंदा गाड़ देते, अपने हाथों से तराशे पत्थर पूजते, और एक ऊँट की दौड़ पर चालीस साल की जंगें लड़ते। तारीख़ ने उन्हें दो बड़ी सल्तनतों के दरमियान एक मामूली हाशिया समझ कर छोड़ दिया था।

और रसूल ﷺ ने उन में क्या किया? आयत **तीन कामों** का नाम लेती है, एक ठीक तरतीब में: '**यत्लू 'अलैहिम आयातिही**' — उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाते; '**व युज़क्कीहिम**' — और उन्हें **पाक** करते; '**व यु'अल्लिमुहुमुल्-किताब वल्-हिक्मह**' — और उन्हें किताब और हिकमत **सिखाते**।'

बेटा, तरतीब देखिए, क्योंकि ये हर असली तब्दीली का निसाब है। पहले **तिलावत** — अल्फ़ाज़ कानों और दिल में दाख़िल होते हैं। फिर **तज़्किया** — रूह साफ़ की जाती है; तकब्बुर, लालच, संग-दिली रगड़ कर निकाली जाती है। उसके **बाद ही** **तालीम** — इल्म उस बर्तन में डाला जाता है जिसे धो लिया गया। आज की दुनिया इसे उल्टा करती है: पहले सर भरो, दिल की फ़िक्र छोड़ो — और यूँ हम ज़हीन लोग

पैदा करते हैं जो अच्छे लोग नहीं होते। **ये दीन प्याले को पीने से पहले धोता है।**

और नतीजा क्या निकला? **एक ही नस्ल** में — सदियों में नहीं, बेटा, एक नस्ल में — वही क़बीले आधी ज़मीन के लिए क़ानून, तिब्ब, हिसाब और रूहानियत के उस्ताद बन गए। और फिर ये तोहफ़ा हम तक बढ़ता है: '**व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम**' — और उसने उसे उन **दूसरों** की तरफ़ भी भेजा जो अभी तक उन से नहीं मिले। वो आप और मैं हैं, बेटा — क़ियामत तक की हर नस्ल उस भेजने में शामिल है। 'ये अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे वो चाहे देता है।'

## गधा और किताबें

फिर सूरह तज़ाद से एक तंबीह देती है — क़ुरआन की सबसे सटीक तस्वीरों में से एक। वो उन लोगों का ज़िक्र करती है जिनपर तौरात का बोझ रखा गया फिर उन्होंने उसे न **उठाया**: 'उनकी मिसाल उस **गधे** जैसी है जो किताबों के गट्ठे उठाता है — **कमसलिल्-हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारा।**'

बेटा, इसका तसव्वुर कीजिए। एक गधा दुनिया के बेहतरीन कुतुब-ख़ाने को अपनी पीठ पर बाँधे घिसटता चला जा रहा है — तफ़्सीरें, हिकमत, क़ानून, हिदायत — और उसे **वज़न** के सिवा कुछ महसूस नहीं होता। वो एक लाइन न पढ़ सकता है; एक लफ़्ज़ से न बदलता है। **वो ख़ज़ाना उठाए हुए है और सिर्फ़ बोझ जानता है।**

और फिर ईमानदार सवाल पूछिए, बेटा, क्योंकि ये आयत दूसरी क़ौमों का मज़ाक़ उड़ाने के लिए नहीं भेजी गई; ये हमें तंबीह करने के लिए भेजी गई। वो क़ुरआन जो सीने में हिफ़्ज़ है मगर कभी ज़ुबान की सचाई या हाथ की रहमत तक नहीं पहुँचने दिया जाता — वही बोझ है। वो डिग्री और सनदें जो किरदार तक न पहुँचीं। वो लेक्चर जो सुने, नोट्स लिए, कुछ न हिला। **इल्म उस से नापा जाता है जो वो उठाने वाले के साथ करता है, उस से नहीं जो उसकी पीठ पर रखा है।**

फिर सूरह उन लोगों से नरमी से दलील देती है जिन्होंने अल्लाह का चुना हुआ होने का दावा किया: 'अगर तुम दावा करते हो कि तुम बाक़ी लोगों को छोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह के दोस्त हो, तो **मौत की तमन्ना** करो, अगर तुम सच्चे हो।' मगर 'वो उसे

**कभी** नहीं चाहेंगे, उस वजह से जो उनके हाथों ने आगे भेजा' — और यही हम सब के लिए आईना है: **मेरी फ़ाइल उस मुलाक़ात के लिए कितनी तैयार है?** और आख़िरी लाइन हर फ़रार का मंसूबा ख़ामोश कर देती है: 'कहिए — बेशक वो मौत जिस से तुम **भागते** हो ज़रूर तुमसे **मिलेगी**; फिर तुम ग़ैब और ज़ाहिर के जानने वाले की तरफ़ लौटाए जाओगे।'

## दौड़ो — और दुकान छोड़ दो

और अब सूरह अपने नाम वाले दिन तक पहुँचती है, बेटा — वो दिन जो अल्लाह ने इस उम्मत को उसकी **हफ़्तावार ईद** के तौर पर दिया: '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू!** जब **जुमा** के दिन नमाज़ के लिए अज़ान हो — **फ़स्'औ इला ज़िक्रिल्लाह** — अल्लाह की याद की तरफ़ **दौड़ो** — **व ज़रूल्-बै'अ** — और तिजारत **छोड़** दो। **ये तुम्हारे लिए बेहतर है, काश तुम जानते।**'

दो अफ़आल महसूस कीजिए, बेटा। '**फ़स्'औ**' — मक़सद के साथ बढ़ो, जल्दी करो, अपनी पूरी नीयत के साथ जाओ (पाँव से दौड़ना नहीं, उलमा वज़ाहत करते हैं, बल्कि **दिल से दौड़ना**)। और '**ज़रूल्-बै'अ**' — बेचना **छोड़** दो। 'पहले सौदा पूरा करो' नहीं, 'इस एक ग्राहक के बाद' नहीं — छोड़ दो। शटर नीचे आता है, लैपटॉप बंद होता है, मोल-तोल जुमले के बीच में रुक जाता है, क्योंकि **हफ़्ते का सबसे मुनाफ़े वाला घंटा** आ गया।

और अल्लाह वो जुमला बढ़ाते हैं जो हर परेशान ताजिर का दिल भर देता है: '**ये तुम्हारे लिए बेहतर है, काश तुम जानते।**' बेटा, ख़ौफ़ सरगोशी करता है: मैं ग्राहक खो दूँगा, सौदा हाथ से निकल जाएगा। बादशाह जवाब देते हैं: **मैं तुम्हें उस घड़ी जो दे रहा हूँ वो उस से बेहतर है जो तुम समझते हो कि खो रहे हो** — और तुम इसे देख लेते, अगर तुम्हारा इल्म वहाँ तक पहुँचता।

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जो इस दीन की पूरी रूह खोल देती है — क्योंकि नमाज़ के बाद अल्लाह मस्जिद में बैठे रहने का हुक्म नहीं देते: '**फ़-इज़ा क़ुज़ियतिस्-सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्-अर्ज़ि वब्तग़ू मिन फ़ज़्लिल्लाह** — फिर जब

नमाज़ पूरी हो जाए तो **ज़मीन में फैल जाओ** और **अल्लाह का फ़ज़्ल तलब करो** — **वज़्कुरुल्लाह कसीरल्-ल'अल्लकुम तुफ़्लिहून** — और अल्लाह को **कसरत से याद** करो, ताकि तुम कामयाब हो।'

देखिए ये कितना मुकम्मल है, बेटा। एक घंटे के लिए, दुनिया रुक जाती है और सब कुछ मस्जिद की तरफ़ मुड़ जाता है। फिर दरवाज़े खुलते हैं और अल्लाह कहते हैं: **अब जाओ, फैलो, कमाओ** — और ग़ौर कीजिए उन्होंने रोज़ी को क्या कहा: '**फ़ज़्लुल्लाह**', अल्लाह का फ़ज़्ल। आपकी दुकान, आपका दफ़्तर, आपका खेत — ये उस से फ़रार नहीं हैं; ये उसकी अता के मैदान हैं।

और जोड़ने वाला धागा: '**अल्लाह को कसरत से याद करो।**' यही वो चीज़ है जो जुमा की घड़ी को पूरे हफ़्ते में ले जाती है। बेटा, मोमिन दो ज़िंदगियाँ नहीं जीता — एक मस्जिद वाली, एक बाज़ार वाली। वो एक ही ज़िंदगी जीता है, और ज़िक्र वो धागा है जो दोनों को सिए रखता है।

## जब क़ाफ़िला आ गया

और सूरह एक ऐसे वाक़िए पर ख़त्म होती है जो सहाबा के बारे में ईमानदारी से दर्ज है, बेटा — और जिसका दर्ज होना ख़ुद इस किताब की सचाई की एक दलील है।

मदीना में एक सख़्त क़हत का ज़माना था। नबी ﷺ जुमा का ख़ुत्बा दे रहे थे कि तिजारत का एक क़ाफ़िला शहर में दाख़िल हुआ, और रिवायत के मुताबिक़ उन्होंने अपनी आमद का एलान करने के लिए दफ़ बजाई। और लोग — भूके, फ़िक्रमंद, माल के इंतिज़ार में — उठ कर बाहर निकल गए, यहाँ तक कि नबी ﷺ खड़े रह गए और मस्जिद में गिने चुने लोग रह गए।

और आसमान ने ये आयत उतारी: '**व इज़ा र-औ तिजारतन औ लह्वनिन्-फ़ज़्ज़ू इलैहा व तरकूक क़ाइमा** — और जब उन्होंने कोई तिजारत या कोई खेल-तमाशा देखा तो उसकी तरफ़ **टूट पड़े** और आपको **खड़ा छोड़** दिया।'

बेटा, इस पर रुकिए। किसी और किताब में उसके अपने बेहतरीन पैरोकारों की ये

कमज़ोरी क़ियामत तक के लिए दर्ज नहीं की जाती। और उन्होंने कोई गुनाह भी नहीं किया था — वो भूके थे और रिज़्क़ के पीछे गए थे। मगर **वक़्त** ग़लत था, और उन्होंने अपने नबी ﷺ को मिंबर पर खड़ा छोड़ दिया।

और अल्लाह का जवाब बहस नहीं करता — वो सिर्फ़ तराज़ू सामने रख देता है: '**क़ुल मा 'इंदल्लाहि ख़ैरुम्-मिनल्-लह्वि व मिनत्-तिजारह** — कहिए: **जो अल्लाह के पास है वो खेल से भी बेहतर है और तिजारत से भी** — **वल्लाहु ख़ैरुर्-राज़िक़ीन** — और अल्लाह सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।'

बेटा, वो आख़िरी लाइन पूरे मसले का इलाज है। वो लोग क़ाफ़िले के पीछे इसलिए भागे कि उन्हें लगा **रिज़्क़ वहाँ है**। और अल्लाह ने फ़रमाया: **मैं ही सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला हूँ।** क़ाफ़िला रिज़्क़ नहीं लाया था; क़ाफ़िले को **लाया** गया था।

और आज हमारा क़ाफ़िला क्या है? वो कॉल जो अज़ान के वक़्त आती है। वो सेल जो जुमा को लगती है। वो मीटिंग जो 'बस दस मिनट और' माँगती है। **हर दौर का अपना दफ़ बजता है, बेटा।** और जवाब वही है: जो उसके पास है वो बेहतर है — और वो जो देने वाला है, वही सबसे बेहतर देने वाला है।

## इस सूरह से क्या सीखा

**1.** हुक्म मानने से पहले जान लीजिए कि पुकारने वाला कौन है — अल-मलिक, अल-क़ुद्दूस, अल-'अज़ीज़, अल-हकीम।

**2.** तब्दीली का निसाब तरतीब में है: पहले तिलावत, फिर तज़्किया, फिर तालीम — ये दीन प्याले को पीने से पहले धोता है।

**3.** आप उन 'दूसरों' में से हैं जिन तक ये भेजा गया — ये फ़ज़्ल है, विरासत नहीं; इसे कमाइए।

**4.** इल्म उस से नापा जाता है जो वो आप में बदलता है, उस से नहीं जो आपकी पीठ पर लदा है।

**5.** जुमा की अज़ान पर दिल से दौड़िए और सौदा जुमले के बीच में छोड़ दीजिए — 'ये

तुम्हारे लिए बेहतर है, काश तुम जानते।'

**6.** नमाज़ के बाद फैल जाइए और कमाइए — रोज़ी को अल्लाह ने ख़ुद 'फ़ज़्लुल्लाह' कहा; और ज़िक्र वो धागा है जो मस्जिद और बाज़ार को सिए रखता है।

**7.** हर दौर का अपना दफ़ बजता है — याद रखिए क़ाफ़िला रिज़्क़ नहीं लाता, क़ाफ़िले को लाया जाता है।

या अल्लाह, हमें अपनी आयतों से पाक कीजिए, हमारे इल्म को बोझ न बनाइए, और अपनी पुकार को हमारे लिए हर सौदे से भारी कर दीजिए। आमीन।